उपसंहार

स्त्री जीवन की एक बड़ी विडम्बना यह है कि समाज उसे एक वस्तु के रूप में ही देखता है। स्त्री अपने अस्तित्व के प्रति अधिक जागरूक है, वह जीवन में प्रत्येक समस्याओं के प्रति संघर्ष के लिए तैयार रहती है। यह पितृसत्तात्मक समाज उसकी स्वतंत्रता में हमेशा बांधा डालने का प्रयास करता है। स्त्री पर बढ़ते अत्याचारों, हिंसाओं, भेदभाव के कारण नारीवाद का जन्म होता है, नारीवाद ने महिलाओं की शिक्षा, उनके अधिकारों, राजनीतिक भागीदारी, महिला कानून, गर्भ निरोधक, प्रजनन, आर्थिक अधिकारों के लिए आंदोलन करता है। नारीवादी आंदोलनों की शुरुआत पश्चिमी देशों से होता हैं जिसका प्रभाव भारत पर भी पड़ता हैं जिससे अनेक समाज सुधारकों ने स्त्री को शोषण से मुक्ति के लिए प्रयास किए। जिससे पिछले 200 वर्षों मे स्त्री की स्थितियों में अधिक सुधार हुआ है वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है, प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान ही कार्य करने लगी हैं। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों को अधिक संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन उसके द्वारा बनाए गए नियमों का विरोध स्त्रियाँ हमेशा करती रही हैं। स्त्री आंदोलनों के कारण ही स्त्रियाँ पुरुषों के समान अपने अधिकारों को पाने में सक्षम हुई जिसके लिए उन्हें अधिक संघर्ष करना पड़ता हैं। समाज स्त्री को पुरुषों के समान कभी भी अधिकार देना नहीं चाहता वह स्वयं को उससे अधिक बुद्धिमान, निपुण, सक्षम समझता हैं लेकिन नारीवादियों ने इसका विरोध किया है वे कहती हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुष के समान प्रत्येक कार्य करने में निपुण, बुद्दिमान हैं उन्हें भी प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने का अधिकार दिया जाए। आज स्त्रियाँ हर एक क्षेत्र में कार्य तो कर रही हैं लेकिन वे खुद को असुरक्षित समझती हैं।

इस्मत चुगताई भारतीय उर्दू भाषा की सबसे सशक्त लेखिका हैं जिनका लेखन पितृसत्तात्मक समाज का विरोध करते हुए उस पर व्यंग्य करती हैं। समाज द्वारा स्त्री के लिए बनाए रूढ़ियों, परम्पराओं को अपने तर्क के माध्यम से उसे नकारती हैं उनका मानना है सारे नियम स्त्रियों के लिए ही क्यों? पुरुष भी इस समाज में रहते हैं यदि वे स्वतंत्र रूप से समाज में रह सकते हैं तो स्त्री क्यों नहीं रह

सकती? इस्मत की कहानियाँ स्त्री के जीवन के समूचे समस्या को अपनी सशक्त भाषा के द्वारा प्रस्तुत करती हैं उनकी कहानियों में निम्न मुद्दे आते हैं:- स्त्री शोषण, स्त्री मन की दशा, पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा उपेक्षित स्त्री की दशा, रूढ़ियाँ- परम्पराओं के बीच पिसती स्त्री की दशा, बाल विवाह, मुस्लिम महिलाओं की समस्याएँ, तीन तलाक़ की समस्या, स्त्री को बोलने- निर्णय लेने पर अंकुश, वेश्याओं की समस्या, स्त्री समलैंगिकता, जाति की समस्या, स्त्री मुक्ति, स्त्री अस्मिता आदि समस्याओं को आधार बनाकर इस्मत चुगताई ने इस समाज का विरोध करती हैं। इस्मत बीसवीं सदी की लेखिका हैं अपने समय की हर एक समस्या को बहुत ही ईमानदारी, स्पष्टता, निर्भीकता से अपने विचारों को प्रस्तुत करती हैं। अपने काल में स्त्री के प्रति पुरुषों का एक भिन्न व्यवहार रहता है जिस कारण स्त्री हमेशा उसका विरोध करती रही हैं, इस्मत आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि स्त्री जीवन की जिन घटनाओं, समस्याओं को वे अपनी कहानियों के द्वारा प्रस्तुत करती हैं वे आज भी समाज में मौजूद हैं जिस कारण महिलाएं उन सभी समस्याओं के बोझ से दबी हुई हैं। इस्मत की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि उन्होंने चारदीवारी में कैद स्त्री की दबी आवाज को स्वर दिया है घर के भीतर उसका शोषण होता रहा और यह बाहरी दुनिया उससे हमेशा अंजान रही हैं या कहा जाए की उसे जानना नहीं चाहती हैं। स्त्री के प्रति संवेदनहीन का नजरियाँ रखने वाला यह समाज स्त्री को हमेशा दुख, दर्द के अतिरिक्त कुछ नहीं देता उसका शोषण प्रत्येक काल में करता रहा हैं जिसे इस्मत ने अपनी कहानियों के माध्यम से बहुत स्पष्टता से व्यक्त कर चुकी हैं। इस्मत चुगताई का जीवन अधिक समस्याओं से घिरा रहा हैं जिससे उनको स्त्री जीवन की समस्याओं का अनुभव अधिक हुआ, विरोध करने का स्वभाव तो उनमें जन्म से ही था जिस कारण अधिक समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं।

मेरा शोध विषय **'इस्मत चुगताई की कहानियों में स्त्री का बदलता रूप व संघर्ष'** हैं जिसमें इस्मत के समय काल में स्त्रियों की कौन-कौन सी समस्याएँ रही, मुस्लिम समाज की स्त्री इस समाज में जिन समस्याओं से गुजर रही थी उसका उल्लेख, उनकी कहानियों में स्त्री के जो विभिन्न रूप व मुद्दे आए हैं उसका विस्तार से विश्लेषण किया हैं साथ ही साथ वे आज किस रूप में प्रासंगिक हैं उसको

विस्तार से बताया हैं। इस्मत के भाषा व शिल्प का वर्णन किया हैं जिनकी भाषा स्त्रियों के जीवन को बहुत ही सहजता से स्पष्ट करती चलती हैं। उनकी भाषा समाज पर अधिक चोट करती हैं जिसके कारण उनका विरोध भी होता रहा है। इस्मत की भाषा स्त्रियों कि भाषा हैं जिसमे नम्रता, भावुकता के साथ साथ समाज के प्रति एक कठोर भाव भी दिखाई देता है। इस शोध के लिए मेरी शोध प्रविधि में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया हैं जिसमे आलोचनात्मक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, लेख का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार इस्मत चुगताई की कहानियाँ अधिक प्रभावित करती हैं। समाज में स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है उसके पीछे पितृसत्तात्मक समाज की जो रणनीति है उसका उल्लेख किया गया है।